चतुर्थ - अध्याय

-: चतुर्थ अध्याय :-

भगवतीचरण वर्मा के प्रमुख सामाजिक उपन्यासों के स्त्री पात्रों का चरित्र - चित्रण ।

'आखिरी दाँव', 'भूले बिसरे चित्र' एवं 'सामर्थ्य और सीमा'

आखिरी दाँव

भगवतीचरण वर्मा का 'आखिरी दाँव' उपन्यास सीमित आकार का घटनाप्रधान सामाजिक उपन्यास है । इसका आकार सीमित होने के कारण इसमें चित्रित पुरुष एवं स्त्री पात्रों की संख्या भी सीमित हैं । इसमें चित्रित जो स्त्री पात्र हैं । वे है चमेली, राधा, रानी तमोलिन और चमेली की सास । इन स्त्री पात्रों का चरित्र - चित्रण आगे किया गया है ।

च मे ली

यौवन के मद से कसे हुए शरीर और तपे हुए सोने के रंग सी तेईस साल की विवाहित युवती चमेली 'आखिरी दाँव' उपन्यास की नायिका है । विवाह के बाद कोई संतान न होने के कारण उसका पति दमडीलाल ससूर छद्म्मीलाल एवं उसकी सास बेहद तंग करते है । इससे चमेली पूरी तरह से अपने वैवाहिक जीवन से ऊब जाती हैं । अनिंद्य सुंदरी चमेली घर के घुटनभरे वातावरण से छुटकारा पाने की बात मन में ठान लेती है । होली के दिन उसके परिवार के सभी सदस्य उसे मारपीट करते हैं । प्रतिकार के स्वरुप चमेली अपनी सास को कडे शब्दों में कह देती है कि "और अब जो तुमने ज्यादा कुछ कहा तो तुम्हारा गला घोट दूँगी - यह याद रखना । सब्र की हद होती है ।"[1] और उसी दिन चमेली गाँव के रतनू सुनार के साथ घर के कुछ अभूषणों एवं पैसे चुराकर उसके साथ बंबई भाग जाती है ।

भोली चमेली दुनिया के नये रंग रुप से अपरिचित होने के कारण वह रतनू सुनार के झूठे वादे को बली पडती है और उसे अपना सर्वस्व अर्पित कर देती है । रतनू ने अपने को पूरा ठगा लिया है उस बात का पता उसे रतनू सुनार ने सेठ हीरालाल के साथ सौदा करने के बाद होता है ।

रतनू सुनार के चंगुल से अपने को बचाने के लिए चमेली पुलिस का सहारा लेती है, किंतु हीरालाल सेठ ने पुलिस को ही खरीद लिया था जिससे चमेली को छुटकारा पाना असंभव था ।

परिस्थिति के कीचड में फंसा हुआ कँवल चमेली का उद्धार विश्रानपुर से अपनी धन-दौलत दाँव पर हारकर संसार का त्याग करके बंबई में आ बसा हुआ रामेश्वर करता है और वह चमेली को गोरेगाँवकेअपने घर ले आता है । वस्तुतः चमेली खुदखुशी करके अपनी जिंदगी खत्म करना चाहती थी, किंतु रामेश्वर के ममत्व भरे स्नेह के कारण उसमें एक प्रकार की नई उमंग जागृत हो उठती है।

पचास वर्षीय रामेश्वर एक सेठ के यहाँ महिना तीस रुपये पर तगादगीर का काम करता है । चमेली उसके स्नेहभरे मन को यथाशीघ्र ही पहचानती है और वह उसके साथ बेहद प्रेम करने लगती है और उसे वह अंत तक निभाना भी चाहती है । इस प्रकार चमेली एवं रामेश्वर के जिंदगी में फिर एक बार नया मोड आ जाता है ।

स्वामीभक्त चमेली रामेश्वर का निर्णय लेते बिना कोई काम नहीं करती है । बंबई के वैभव और विलासी जीवन से जब वह परिचित होती है और बंबई महानगर में दौलत ही सब कुछ है यह जान लेती है तब वह भी कुछ कमाना चाहती है । उसलिए वह रामेश्वर के सामने हट करके पान की दुकान खुलवाकर रामेश्वर को मदद करती है । किंतु वह राधा तथा शिवकुमार के प्रलोभनों के सामने झुकती नहीं है । शिवकुमार को तो वह स्पष्ट शब्दों में कह देती है कि "सेठ तुमने मुझे राधा की तरह रण्डी समझ रखा है क्या ? अब अगर दूसरी बात मुँह से निकाली तो जीभ खींच लूँगी ।" 2

चमेली में सेवावृत्ति की भावना भी प्रचुर मात्रा में है । वह रामेश्वर का हरदम खयाल रखती है । अपने पडोस में रहनेवाली बद्चलन औरत राधा जब बीमार पडती है तब वह उसकी सेवाशुश्रूषा बडे लगन के साथ करके उसको ठीक करती है । वही राधा उसे शिवकुमार जैसे नीच कर्मी के चंगुल में फाँसने का प्रयत्न करती है । किंतु चमेली के मन में उसके प्रति कभी भी प्रतिहिंसा की भावना जागृत नही होती है ।

स्पष्टवादी चमेली अपनी तथा रामेश्वर की इज्जत के खातिर फिल्म इंडस्ट्री में काम करने के लिए राधा को स्पष्ट रुपसे नकार देती है । किंतु भाग्य की विडम्बना उसका पीछा नहीं छोडती है । रामेश्वर पुनःश्च जुआ तथा सट्टा खेलनेलगता है और बार बार हार खाता है, जिससे उसकी आर्थिक स्थिति खोखली बन जाती है । जिससे रामेश्वर के मन में उदासी छाने लगती है । वह मन ही मन दुर्बल होता जाता है । यह बात चमेली तुरंत जान लेती है और उसके साथ समझौता एवं विचार विमर्श करके राधा के प्रयत्न से फिल्म क्षेत्र में प्रवेश करके सफल हिरोईन बन जाती है ।

यह समझौता केवल रामेश्वर को बचाने के लिए ही करती है, क्योंकि रामेश्वर मारवाडी सेठ के चार हजार रुपये रेस में हार जाता है । इस मुसीबत से वह रामेश्वर को बचा लेती है । इससे स्पष्ट है कि चमेली तर्क निपुण एवं व्यवहारी नारी है ।

कुशल कार्यक्षमता एवं प्रभावी व्यक्तित्व के कारण चमेली का फिल्म क्षेत्र में काफी परिचय हो जाता है । जिससे उसे अमाप धन-दौलत भी मिलती है, किंतु फिल्म क्षेत्र के मतलबी लोगों से चमेली का आंतरिक मन ऊब जाता है । अतः वह इस क्षेत्र से छुटकारा पाकर रामेश्वर के साथ आराम से जिंदगी बिताना चाहती है ।

ढाढसी चमेली को जब शिवकुमार ने सेठ शीतलप्रसाद के साथ फिल्म कंपनी की मैनेजिंग डायरेक्टर बनाने हेतु पाँच लाख रुपये का सौदा किया है यह बात मालूम होती है तब वह बहुत ढादसी निर्णय ले लेती है । शीतलप्रसाद की वासना के शिकार से बचने के लिए तथा रामेश्वर को मायावी जाल से बचाने के लिए वह शीतलप्रसाद की हत्या कर देती है और रामेश्वर को बचाने के लिए उसके पास आती है । पुलिस चमेली का पीछा कर रही थी और चमेली रामेश्वर को जुओ के दाँव पर से हटा रही थी किंतु रामेश्वर एक दाँव और एक दाँव कहके अपनी पूरी पुंजी हार जाता है। पुलिस के चंगुल से बचने के लिए चमेली एक कमरे में छुप कर बैठती है । तब तक रामेश्वर भी अपनी जिंदगी का अंतिम दाँव हार जाता है । वह पुलिस को देख कर भागने का प्रयत्न करता है। परिस्थिति की विडंबना को चमेली तुरंत पहचान लेती है और उसी कमरे में अपने आपको गोली मार कर आत्महत्या कर लेती है । उसके प्राण निकलते समय रामेश्वर उसके पास जाता है, तब भावुक चमेली रामेश्वर की और देखकर विवश होकर कहती है "नहीं बचा सकी, न तुम्हें और न अपने को ।" 3

इस प्रकार चमेली को उपन्यासकारने प्रारंभ में भोली किंतु बाद में स्वाभिमानी, जिद्दी, साहसी, कर्तव्यपरायण, स्वामीभक्त आदि रुपो में चित्रित किया है, जिससे वह अमर पात्र बनकर रही है ।

राधा

उपन्यासकार ने राधा को फिल्म कंपनी में चपरासी का काम करनेवाले जगमोहन की पत्नी के रुप में चित्रित किया है । राधा अपने पति की लखपति बनने की उम्मीद को साथ देनेके लिए

उसके साथ बंबई आती है, किंतु बंबई के फिल्म क्षेत्र में राधा को एकस्ट्रा हिरोईन के रुप में काम मिलता है । उसी पर राधा को समाधान मानना पडता है ।

सत्ताईस साल की राधा का शरिर फैलने के कारण फिल्म क्षेत्र के एकस्ट्रा सप्लाएर की नजर उस पर से कम होने लगती है, जिसे राधा का सम्मान उचित ढंग से नहीं होता है । यही राधा का दुर्भाग्य है । फिर भी राधा हिम्मत नहीं हारती । उसका फिल्म क्षेत्र के कतिपय लोगों के साथ परिचय होने के कारण शिवकुमार नामक उच्चका लखपति नई लडकियाँ खोजकर अपने चंगुल में फँसाने का काम सौंप देता है ।

राधा
चालाक चमेली उसके इलाखे में आई हुई हर नव युवती को अपना शिकार बनाने का प्रयत्न करती रहती है । चमेली को वह कई बार अपने जाल में खींचने का प्रयत्न करती है, किंतु वास्तविकता की परखी चमेली उसके हाथ में आसानी से नहीं लगती है ।

राधा अपने इलाखे में बद्चलन औरत के रुप में प्रख्यात थी । उसी कारण उसके इलाके के हर लोग उसके प्रति घृणा करते थे, किंतु राधा में कोई परिवर्तन नहीं होता है । वह अपने मतलब के लिए कोई भी खतरा स्वीकारने के लिए तत्पर तैयार हो उठती है, क्योंकि वह अच्छी तरह से जानती है कि, "पुराने ग्राहक तो मौजूद थे, पर उन ग्राहकों को नये माल की आवश्यकता थी ।"4 अतः इसलिए वह हर दम नई लडकियों पर निगरानी रखकर उन्हे अपने जाल की शिकार बनाने का प्रयत्न करती हुई नजर आती है ।

राधा तर्कशील नारी है । चमेली तथा रामेश्वर की आर्थिक विपन्नता जब बढ जाती है, तब वह तर्क करके फिर एक बार चमेली को अपने जाल में फँसाने का प्रयत्न करती है और उसमें वह सफल भी होती है ।

निष्कर्ष के रुप में हम कह सकते है कि राधा का चरित्र उसके बुरे गुणों के कारण गिरा है । उसका अपनी जिंदगी के प्रति देखने दृष्टिकोण अलग है । वह केवल शान से विलासमयी जीवन बीताना चाहती है । उसके मन में अमानवीय भावना के दुर्गुण प्रचुर मात्रा में भरे हुए है । इस प्रकार उपन्यासकार ने राधा को नवयुवतियों का पतन करनेवाले एक कीडे के रुप में चित्रित किया है ।

चमेली की सास

पचास वर्ष उम्र की चमेली की सास को उपन्यासकार ने बहुत ही खाष्ट स्वभाव के रुप में चित्रित किया है । चमेली को कोई संतान न होने के कारण वह उसे हरदम सताती रहती है । मातृत्व गुण के सभी अच्छे बुरे गुणों का फायदा उठाकर उसने अपना पुत्र दमडीलाल को भी अपने हाथ का खिलौना बनाकर रखा है । अतः दमडीलाल भी अपनी पत्नी चमेली के खिलाप हो उठता है । उसी कारण घर में हमेशा घुटनभरा वातावरण रहता है ।

चमेली की सास में सहानुभूति की भावना तनिक भी नहीं है । चमेली की छोटी सी भी गलती पर वह तडपकर कह उठती है । जैसे, "क्यों री कुलच्छिनी ! यारों से अब फुरसत मिली !"5 और वह तुरंत ही चमेली को मार पीट करके अपना गुस्सा उतार देती है ।

क्रूर बाते करना यह चमेली सास का नित्यक्रम ही था । वह हर दम चमेली पर बिगडती रहती है घर में पानी देखने को न मिलने पर वह कडे स्वर मे चमेली को सुनाती है कि "क्यों री चुडैल, बांझ कही की ! अभी तक सो रही है । पानी बानी कीं फिक्र है ?" 6

उसके क्रूर स्वभाव के कारण ही चमेली को उसके कृत्यों से छुटकारा पाने के हेतु रतनू सुनार के साथ भाग जाना पडता है ।

उपन्यासकार ने चमेली की सास को चित्रित करके यह संकेत किया है कि प्रत्येक सास में अच्छे गुण होने चाहिए उसने अपनी बहू को अपनी लडकी की तरह संभलना चाहिए अन्यता परिवार बरबाद होने में देर नहीं लगती है ।

रानी तमोलिन

रानी तमोलिन रामेश्वर के गाँव की पानवाली थी । उसका व्यक्तित्व प्रभावी होने के कारण लोग उसकी दुकान पर बडे चाव से पान खाने के लिए आते थे और संतुष्ट हो जाते थे ।

रानी तमोलिन भले ही पान की दुकान पर बैठती थी किंतु उसका चरित्र निर्दोष एवं निर्मल था । उसके इस प्रकार के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर रामेश्वर भी चमेली को पान की दुकान खुलवा देने पर तैयार होता है ।

उपन्यासकारने रानी तमोलिन के व्यक्तित्व का विकास होने नहीं दे पाया है । केवल दो चार पंक्तियों में ही उसके व्यक्तित्व को समेट दिया है ।

इस प्रकार भगवतीचरण वर्मा ने 'आखिरी दाँव' उपन्यास में सीमित स्त्री पात्रों का निर्माण करके फिल्म क्षेत्र में चलते हुए भ्रष्ट व्यवहार की कहानी चित्रित की है, जिसमें वे सफल हो गये है ।

'भूले बिसरे चित्र'

'भूले बिसरे चित्र' यह भगवतीचरण वर्माजी का विशालकाय सामाजिक उपन्यास है । पाँच खंडो में विभाजित इस उपन्यास की मुख्य कथावस्तु के साथ कतिपय प्रासंगिक कथाओं को जोड दिया है । जिससे उपन्यास में कतिपय पुरुष एवं स्त्री पात्रों का प्रयोजन करना लेखक के लिए आवश्यक बन गया है । 'भूले बिसरे चित्र' में पुरुष पात्रों की तरह स्त्री पात्रों की संख्या भी ज्यादह है । उनमें से कतिपय स्त्री पात्र अपनी चरित्रिक विशेषताओं के कारण उपन्यांस की कथावस्तु में विकास लाने के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दे चुकी । उन सभी स्त्री पात्रों का चरित्र चित्रण आगे किया गया है -

छिनकी

छिनकी मुंशी शिवलाल की रेखैल नोकरानी है । उसका चरित्र उपन्यासकार ने इस ढंग से चित्रित किया है कि उससे वह श्रद्धा की अधिकारिणी सिद्ध होती है । छिनकी ने शिवलाल की इतनी सेवा की है कि उसकी पत्नी भी उतनी सेवा नहीं कर सकती । छिनकी ने एक ओर शिवलाल के लिए पत्नी की सी भूमिका निभायी है दूसरी ओर यमुना के लिये सास की तो ज्वालाप्रसाद के लिए माँ की भूमिका निभायी है । जिसके कारण वह उपन्यास के अन्य पात्रों के भाँति हमें भी स्नेह की पात्र ठहराती है । छिनकी की सेवावृत्ति के कारण तथा उसके अंदर स्नेहभरे गुणों से मुन्शी शिवलाल मरते समय ज्वालाप्रसाद को कहते भी है कि "यह छिनकी, यह तेरी दूसरी माँ है । ------ । तो इसे तेरी दया पर छोड रहा हूँ । तेरी सबसे अधिक सगी यही है ।" 7

तीस वर्षीय छिनकी जाति से कहारिन थी । गठा हुआ बदन साँवला रंग और मुँह पर नाचनेवाली अल्लड हंसी और समय की पक्की छिनकी घसीटे की दूसरी बीबी थी । घसीटे की पहली बीवी राधिया के मरने के बाद छिनकी ने घसीटे के बारह साल का लडका भिखू को बडे लाड प्यार से संभालने की जिम्मेदारी निभाई है । ला-औलाद छिनकी औलाद होने की आशा तनिक भी नहीं करती है । छिनकी ढादसी भी है । ज्वालाप्रसाद को नौकरी मिलते ही राधेलाल के परिवार के कारण यमुना बहुत तंग आ जाती है, तब छिकी शिवलाल के कान भरने लगती है । वह शिवलाल को ढाढस के साथ कह देती है कि "देखो छोटी मालकिन बहू के साथ बडी ज्यादती करती है । बिचारी ज्वाला की बहू कच्ची उमिर की, तौन दिन रात असे काम लेती है । हम पूछित है कि तुम छोटी मालकिन का मना काहे नाही करत है ।" 8 अन्य कई जगह पर भी छिनकी राधेलाल

की पत्नी के खिलाप बातें करने में हिचकिचाती नही है। छिनकी ज्वालाप्रसाद एवं यमुना के प्रति हमेशा स्नेह एवं वात्सल्यमयी भाव रखती है । घसीटे की मृत्यु के बाद यमुना को पुत्र होते ही वह मुन्शी शिवलाल को ज्वालाप्रसाद के पास जाने की सलाह देती है, जिसे शिवलाल को मानना ही पडता है ।

छिनकी धर्म-भीरु भी है । वस्तुतः वह विधूर मुंशी शिवलाल के पलंग की सेवा भले ही करती हो, किंतु वह अपने और शिवलाल के बीच के अंतर को समझती है । त्रिवेणी तट पर शिवलालउसे खिचडी बना देने की बात कहते है, तब कायस्थ एवं कहार जाति का भेद जाननेवाली छिनकी डर के मारे कहती है कि 'हे गंगा मइया ! तुम हमार साच्छी है कि हम इनकेर धरम नाही लीन । रसोई बनाय से उन्हें खिलाई तो इनकेर धरम जाय, और न बनाई तो ई भूखन कलपैं और हम पार मार पड़े ऊपर से ।"9 छिनकी कि इस बात से उसकी धर्म भीरुता का पता चलता है, किंतु फिर भी उसका शिवलाल के परिवार पर प्रभुत्व रहता ही है ।

धर्म को अधर्म माननेवाली छिनकी यह समझ लेती है कि जब शिवलाल की बरसी में 500 आदमियों को दावत की योजना राधेलाल बनाते है, तब वह उसका विरोध करती है क्योंकि धर्म के नाम पर अधर्म से धन इकठ्ठा करना उसे तनिक भी पसंत नहीं है । अतः राधेलाल को कहती है " ई जोर जुलुम से जो सामान बटोरा जाई ऊसे उनकेर परलोक सुधारै की जगह बिगड तौन ई सब न चली । इकईस ब्रम्हनन का खिलाय देव और ई जो पचास साठी मेली - जोली, नाते - रिश्तेदार आवैं इनकेर बिरदारी कर डालौ । ई सब जिन्स का प्रबंध हम कर लेव, तुम ई की चिंत न करौ ।"10 स्पष्ट है छिनकी को अधर्म से किया जानेवाला कार्य बिलकुल पसंत नहीं है ।

छिनकी हमेश शिवलाल तथा उसका पुत्र ज्वालाप्रसाद के परिवार का हित चाहती है । सौरॉव में राधेलाल का परिवार ज्वालाप्रसाद के घर रहने के लिए आता है, तो छिनकी को ऐसा लगता है कि वे सब मिलकर गंगा का हक एवं भाग्य खा रहे है । इसलिए वह हमेशा चिंतित रहती है । एक ओर उसके मन में राधेलाल के परिवार के प्रति द्वेष है, तो दूसरी ओर ज्वालाप्रसाद के परिवार प्रति स्नेह एवं प्रेम है । द्वेष की भावना उसके मन में इसलिए है कि राधेलाल के परिवार का निकम्मापन । इसलिए वह हमेशा राधेलाल के परिवार के प्रति नफरत करती है ।

भीखू छिनकी के सौत का बेटा होते हुए भी उसके प्रति खटकनेवाला व्यवहार कभी भी नहीं करती है । मरते समय अपनी बची हुई सारी पूँजी भीखू को सौंप कर माँ के कर्तव्य को

निभाती है । छिनकी को उसकी जिंदगी में जो कुछ मिला था उस पर ही वह संतुष्ट थी । उसमें लालच की भावना का अभाव है । इसी कारण उसके चरित्र का विकास स्वाभाविक ढंग से हुआ है । अतः छिनकी आँखो से ओझल होने के बाद भी हम उसे विस्मृत नहीं हो पाते हैं ।

जैदेई

जैदेई शिवपुरा के बनिया जाति के जमींदार प्रभुदयाल की पत्नी है । जैदेई को सभी नम्बरदारिन भी कहते है, वह एक हँसमुख एवं मिलनसार स्वभाव की स्त्री है । जैदेई ज्वालाप्रसाद को देवर के रुप में मानती है और उसने भी ज्वालाप्रसाद को अपने को भौजी कहने को मजबूर किया था । जैदेई अपने पति प्रभुदयाल के खिलाप खुले हाथ की उदार स्त्री है और उसमें त्याग एवं ममत्वमयी भावना आदि मानवीय गुणों का भंडार प्रचुर मात्रा में मौजुद है ।

लगभग पैंतिस वर्षउर्म की जैदेई देखने में उन्नीस-बीस वर्ष से जादा नहीं लगती है । उसने पति प्रभुदयाल की हत्या के बाद जैदेई ज्वालाप्रसाद कोही अपना सर्वस्व मान लेती है । अतः वह हरदम ज्वालाप्रसाद का खयाल रखने का प्रयत्न करती है । ज्वालाप्रसाद की कौनसी भी बात मानने के लिए वह तत्पर तैयार हो उठती है । उसका उदाहरण है - ज्वालाप्रसाद जब बरजोरसिंह के लडकों के नाम पर जमीन पटटा कर देने के सिफारिश लेकर जैदेई के पास आते आते है और विवश होकर उसे कहते है कि, "भौजी, उन अनाथों के पास उतना रुपया कहाँ कि वे यह कर्जा अदा कर सकें ! मेरे पास भी नाही है, नहीं तो मैं ही यह रुपया उन्हे देदेता !" ।1 चतुर जैदेई ज्वालाप्रसाद के मन की बात ठीक तरह से समझ लेती है क्योंकि उसे ज्वालाप्रसाद के कथन से भविष्य की आहट होती है । अतः तुरंत ही ज्वालाप्रसाद को एक सौ अशर्फियों की थैली भेंट करते हुए कहती है "देवरजी, ये सौ अशर्फियाँ लेकर ----- अब आगे से यह मत कहना कि तुम्हारे पास रुपया नहीं है । जो कुछ मेरे पास है वह तुम्हारा है ।" ।2 स्पष्ट है विधवा जैदेई ज्वालाप्रसाद का सहारा लेना चाहती है । अतः वह ज्वालाप्रसाद के साथ कौनसा भी समझोता करनेके लिए तैयार होती हुई दिखाई देती है ।

वैभव और विलास के वातावरण में पली हुई जैदेई ज्वालाप्रसाद को अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है और वह ज्वालाप्रसाद को देवता के रुप में मानती है । प्रारंभ में जैदेई स्वैराचारिणी होने की आशंक होती है किंतु ऐसा नही हो पाता है । उसने अवैध संबंध जरुर प्रस्थापित किए है किंतु वे केवल ज्वालाप्रसाद तक ही और वह भी मर्यादा एवं सीमा का पालन करके ।

वात्सलमयी जैदेई ज्वालाप्रसाद के पुत्र गंगाप्रसाद के प्रति अपना पुत्र लक्ष्मीचंद का सा ही व्यवहार करती है । गंगाप्रसाद डिप्टी कलक्टर होने के बाद भी वह उसकी आर्थिक मदद करती है। गंगाप्रसाद के प्रति उसके मन में इतना स्नेह पैदा होता है कि मृत्यु शय्या पर भी वह उसके नाम की रट लगाती रहती है ।

जैदेई में सफल सास के गुण भी प्रचुर मात्रा में मौजुद थे । अपनी बहू राधा तथा ज्वालाप्रसाद और गंगाप्रसाद की पत्नियाँ यमुना एवं रुक्मिनी के साथ वह हमेशा वात्सलमयी एवं स्नेहभरा व्यवहार करके उन सभी को हमेशा प्रसन्न रखने का प्रयत्न करती है । अतः जैदेई के इसी मानवीय गुणों के कारण वह सभी की कृपापात्र बन जाती है । ज्वालाप्रसाद भी जीवन भर उनके संबंधों का निर्वाह करता है । जैदेई जब बीमार पड जाती है तब ज्वालाप्रसाद एवं गंगाप्रसाद दोनों भी उसकी उचित सेवा सुश्रुषा करते है । जिससे उनके साथ इतना गहरा संबंध प्रस्थापित होता है कि मरते समय जैदेई अपने प्राण ज्वालाप्रसाद की गोद में छोड देती है ।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जैदेई में नारी सुलभ सभी गुण प्रचुर मात्रा में मौजूद है वह हसमुख, सरस रुप यौवन संपन्न, उदार, त्याग की पुजारिन, दयामयी, चतुर एवं सहृदय स्त्री है । उसके इन गुणों के कारण ही वह उपन्यास का अमर पात्र बन चुकी है ।

विद्या

'भूले बिसरे चित्र' की विद्या गंगाप्रसाद की पुत्री एवं नवल की छोटी बहन के रुप में हमारे सम्मुख आती है । विद्या में अपने भाई नवल के समान ही विद्रोह की भावना मुखारित है । विद्या आधुनिक युग की विद्रोहिणी नारी के रुप में अवतरित हुई है । उसके विचार स्वतंत्र, नये युगानुरुप एवं देश-प्रेम से सुसंगत है । इसी कारण विद्या और नवल दोनों नें भी साम्य दिखाई देता है ।

वस्तुतः उपन्यास के तीसरे खंड में विद्या का उदय हुआ है और उसके चारित्रिक विशेषता का विकास चौथे एवं पाँचवे खंड में हुआ है । उसका प्रारंभिक रुप अल्हड है किंतु वह अपने दायित्व को कभी भूलती नहीं है । आधुनिक संस्कारों से युक्त बनारस से प्रथम वर्ष बी.ए. की परीक्षा देकर वह अपने बीमार पिता की सेवाशुश्रा करने में जुट जाती है । उसके मन में अपने परिवार के प्रति बहुत ही गहरी आस्था है ।

विद्या दूसरों का मूल्यांकन करना अच्छी तरह से जानती है । नवल द्वारा रायबहादूर कामतानाथ का स्विट्ज़रलैंड जानेका प्रस्ताव ठुकराने पर उसे अपने भाई के प्रति गर्व होता है । वह तुरंत ही नवल को कह उठती है "तुम इन्कार कर आए न दादा, तुमसे इसी बात की आशा थी । पिता हम दोनों के बीमार हैं, ----- । वे लोग हमारी भावना को क्या समझेंगे ।" ।3

विद्या के विद्रोही रुप का परिचय उसके विवाह के संबंध से होता है । वह नहीं चाहती है कि अर्थपिशाश्च बिंदेश्वरीप्रसाद का पुत्र सिद्धेश्वरी से उसका विवाह संपन्न हो । उसे जब उसके विवाह के कारण नवलने ईंग्लैंड जाना रोक दिया है तब उसे बहुत यातनाएँ होती है । वह करुण स्वर में नवल को कहती है "दादा मेरा विवाह तुम वहाँ मत करो, और मैं विवाह करना भी नहीं चाहती ।" ।4 लेकिन पिता भक्त नवल उसकी कुछ सुनता नहीं, तब विद्या का करुणामयी स्वर फिर एक बार विवाह के खिलाफ विद्रोह प्रकट करता है "मैं तबाह हो जाऊँगी दादा ! हाथ जोडती हूँ दादा, मुझे उन अर्थपिशाचों के घर मत धकेलो, अभी समय है ।" ।5 किंतु त्यागी एवं कर्तव्य निष्ठ नवल विद्या की आंतरिक भावना को समझ नहीं पाता है । बेचारी विद्या को अपनी भावनाओं को दबाकर यही कहना पडता है - "तुम मेरी बात नहीं समझ रहे हो दादा, समझ भी नाही पाओगे ।"।6 इससे स्पष्ट है कि विद्या में एक ओर विद्रोही स्वर दिखाई देता है तो दूसरी ओर शांत भी । नवल के न मनाए जाने पर वह विवाह को तैयार हो जाती है ।

विद्या आधुनिकता के बोध के संकेतों को अच्छी तरह से समझती है । इसलिए वह अपने घर को कभी भी तबाह होना नही चाहती है । और न ही किसी पर बोझ बनकर रहना पसंत करती है । उसके इसी आधुनिकता के बोध के कारण वह नवल के पास उसे बी.ए. पास करवा देने की प्रार्थना करती है । इससे स्पष्ट है कि विद्या स्वावलंबी बनना चाहती है ।

विवाह पूर्व अपने पिता के परिवार की आर्थिक बरबादी होनेवाली यह बात जो उसने महसूस की थी वह उसे ससूराल में सत्य रुप में देखने को मिलती है । फिर भी अपने कुल-शील का सम्मान रखने के लिए मौन रह कर सब कुछ सह लेती है । नवल द्वारा ससुराल की हालत बार-बार पूछने पर बुध्दि से तेज विद्या आधुनिकता की पुष्टि जोडकर कहती है - " दादा ! यह असमान विचारों और मान्यताओंवालों में विवाह, यह असमान परिवारों में विवाह, यह बड़ा भयानक है । मुझे ही लो, जैसे-जैसे मेरे गौने के दिन आते जाते है, वैसे-वैसे मेरी घबराहट बढ़ती जा रही है ।" ।7

स्वतंत्र प्रवृत्ति विद्या की ससुराल वालों से नहीं पटती है, तब वह उनसे अपने संबंधों का विच्छेदन करती है । इससे विद्या के चतुरता धैर्यशिलता एवं ढाढस आदि गुणों का परिचय होता है ।

नवल की विचार धारा से प्रभावित विद्या मैके में आने के बाद चाहरदिवारी में बैठना पसंद नहीं करती है । वह भी नवल की तरह राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में अपना योगदान देने के लिए तत्पर तैयार हो उठती है । इससे उसकी देश के प्रति निष्ठा का परिचय होता है ।

विद्या में आत्मनिर्भर गुण होने के कारण वह अपना बोझ दूसरो पर उतारना नहीं चाहती है । अतः वह नारी शिक्षा सदन में अध्यापिका का कार्य करती है । इसपर उषा जब व्यंग्य करती है तब वह उसे ठोक उत्तर देती है कि "अपने पैरों पर मैं खुद खडी हो रही हूँ । इस बात पर मुझे गर्व है । ----- । दूसरे मेरे जीवन में आते कहाँ से है ! न दूसरे कुछ कर देंगे और न मेरी छीन लेंगे ।" ।8 इससे विद्या की निर्भीक वृत्ति का भी परिचय होता है ।

विद्या अपने भाई नवल से भी ज्यादह दृढ है । नवल जब उषा के साथ विवाह संबंधी बातों से टूटता हुआ दिखाई देता है, तब वह उसे धैर्य बाँधने का प्रयास करती हुई कहती है - "दादा तुम टूट कर फिर से बने रहे हो, खोकर अपने को पा रहे हो । फिर यह अविश्वास और कायरता क्यों ? साहस करो, अपने को बटोरो ।" ।9 विद्या अल्पवयस्क होते हुए भी अपने विचारों से सुलझी हुई है । वह अच्छी तरह से जानती है कि पुराने को टूटना है फिर उसे सँभालने से क्या फायदा अतः वह नवल के साथ उसकी चर्चा भी करती है - "दादा, वह प्राचीन तो खुद-ब-खुद टूट रहा है, उसे बचाने में तुम्हें अपने को तोड देना पडेगा, इसलिए उसके बारें में दुखी होना बेकार है ।"20

वस्तुतः विद्या नारी वर्ग का एक ऐसा प्रतिनिधी पात्र है, जो समस्त नारी वर्ग का पथ प्रशस्त करती है । नारी के विद्रोही प्रतिनिधि का उसका प्रारंभी रुप दहेज प्रथा का विरोध करता है, तो बाद में ससुराल के सामंतवाद का । अध्यापिका की नौकरी करके उसने समस्त नारी समाज को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा ही दी है । उपन्यास के अंत में उसका व्यक्तित्व खुद को राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में झुका देने से और अधिक मुखरित हो उठा है । जिसे हम कभी भूल नहीं सकेंगे।

यमुना

यमुना मुन्शी शिवलाल के नायब तहसीलदार पुत्र ज्वालाप्रसाद की पत्नी है । यमुना राजपुर के मुन्शी रामसहाय की पुत्री थी । ज्वालाप्रसाद के साथ जब उसका गौना हुआ था, तब उसकी उम्र सोलह साल की थी ।

उपन्यासकार ने यमुना को संयुक्त परिवार की पतिपरायण मयार्दाशील नारी के रुप में चित्रित किया है । ज्वालाप्रसाद जैसे नायब तहसीलदार की पत्नी होते हुए भी उसमें गर्व रंचमात्र नहीं है उसके परिवार में उसके पति के चाचा राधेलाल की पत्नी का ही अधिकार चलता है । यह बात छिनकी को खटकती है, वह बार-बार यमुना के हित को सोचते हुए उसको उकसाने का प्रयत्न करती है, किंतु मर्यादाशील यमुना यह कह कर टाल देती है कि "का बताई छिनकी चाची, हम तो उनसे बहुत कहा मगर उइ कुछ सुनतै नाहीं । कहत है कि जस बप्पा ठीक समझि हैं वैस करि है ।"21। स्पष्ट यमुना मर्यादाशील पतिपरायण नारी है ।

सहनशील यमुना घाटमपुर में भी उसके घर में राधेलाल के पत्नी के अधिकार के खिलाफ कोई बाते उठाती नही हैं । छिनकी के कहने पर वह अपने भाग्य को ही दोषी मानती हुई कहती है "छोडो छिनकी चाची अपने भाग का खात पियत आंय । जाओ गंगा को घुमाय लाओ बाहर ।"22 सहनशील यमुना राधेलाल की पत्नी ने भांडार घर की चाभी लेने पर भी मौन रहती है । उससे यमुना के शांत एवं कोमल स्वभाव का परिचय होता है ।

यमुना भावुक इतनी है कि जब राधेलाल की पत्नी शामलाल के पत्नी के खिलाफ क्रूरता का व्यवहार करती है, तब यमुना शामलाल के पत्नी के प्रति सहानुभूति सा व्यवहार करके उसे धैर्य बांधने का प्रयत्न करती है । शामलाल की पत्नी जब घर से विदा होती है, तब यमुना का मन करुणामय हो उठता है । वह खुद अपने पैरें के पाजेब उतार कर उसे देदेती है और उसे सलाह भी देती है कि "तुम्हारे लिए मैं कोई गहना नहीं बनवा सकी बहू,यह मेरी पाजेब लेती जाओ । मैं दूसरी बनवा लूंगी । ----- और अगर कभी ये लोग तुम्हें कोई तलीफ दे तो किसी तरह मुझे खबर करा देना ।"23

अपने परिवार में कुलह न पैदा हो जाय इस ओर यमुना हमेशा ध्यान दे देती है । अपने पति ज्वालाप्रसाद का जैदेई के साथ जो संबंध थे, उसके बारें में भी वह कभी कुछ कहती नहीं है । आत्मविश्वासी एवं पतिभक्त यमुना सिर्फ इतना कहती है कि - " नम्बरदारिन का मुँह कि वह तुम्हे मुझसे छीन सके ! इस घर की मालकिन तो मैं हूँ । तुम नम्बरदारिन के साथ हंस खेल भले ही लो, लेकिन रहोगे मेरे, हमेशा - हमेशा के लिए ।"24 यमुना अपने इन्हीं महान आदर्शो के कारण उपन्यास के अन्य सभी पात्रों से ज्यादह मात्रा में सहानुभूति पाने में सफल हो चुकी है ।

यमुना को अपने परिवार के सभी व्यक्ति के प्रति हमेशा चिंता बनाई रहती है । उसे जब टी.बी. बीमारी जकड लेती है, तब वह खुद की चिंता न करके परिवार की चिंता करती है । वह अपना बोझ किसी दूसरों पर उतार देना नही चाहती है इसलिए वह यथाशीघ्र मरना तक पसंद करती है । अतः वह रुक्मिनी को कहती है की - "बहुत तकलीफ दी है तुम्हें, क्षमा कर देना ।"25

उपन्यासकारने यमुना को परिवार के बाहर न आने देने से वह अमिटसी छाप छोड नहीं सकी है किंतु आदर्श भारतीय पारिवारिक रमणी, त्याग की मूर्ती, सहनशीलता की पूर्ती आदि कतिपय महान मानवीय आदर्शों के कारण उसके व्यक्तित्व को कोई क्षति नही पहुँची है ।

रुक्मिनी

रुक्मिनी ज्वालाप्रसाद का पुत्र गंगाप्रसाद की पत्नी है । उपन्यासकारने रुक्मिनी को भी यमुना की तरह आदर्श भारतीय नारी के रुप में चित्रित किया है । अपनी सास यमुना की तरह रुक्मिनी भी मर्यादाशील है । गंगाप्रसाद को जब दिल्ली दरबार में जाना पड़ता है, तब रुक्मिनी को भी चलने के लिए कहने के बाद वह शर्माकर कहती है "राम - राम तुम्हारे साथ दिल्ली घूमने पर लोग क्या कहेंगे ? दो हाथ घूँघट काढकर मैं तुम्हारे साथ चलूँगी तो लोग हसेंगे नहीं ?" 26 लेखक ने रुक्मिनी को यहाँ मर्यादाशील के रुप में चित्रित करके तत्कालीनसमाज में प्रचलित पर्दा-प्रथा की और भी संकेत किया है ।

सहनशीलता रुक्मिनी में प्रचुर मात्रा में है । गंगाप्रसाद को नोकरी के कारण अनेकों जगह पर घूमना पड़ता है । अतः वह उनके साथ जाने के लिए कभी भी जीद पकड़कर नही बैठती है । गंगाप्रसाद के पर स्त्री के साथ संबंध की बात उसे मालूम होते हुए भी वह हमेशा मौन रहती है ।

सेवाभक्त रुक्मिनी अपनी सास यमुना जब बीमार पडती है तब वह उसकी अथक परिश्रम से सेवाश्रुषा करती रहती है । रुक्मीनी में झट से निर्णय लेने की क्षमता भी है । विद्या के ससूरवाले जब विद्या का छल करतें हैं तब उसकी भलाई के हेतु वह अपने पुत्र नवल को कहती है "नवल बेटा विद्या को अपने साथ लेते आना । विद्या का कोई दोष नहीं है, वही सब-के-सब चाण्डाल है ।"27 स्पष्ट है कि रुक्मिनी का भविष्यकाल में घटनेवाली घटनाओं की ओर देखने का दृष्टिकोण बहुत जागृत है । विद्या जब स्वतंत्रता अंदोलन में उतरती है तब रुक्मिनी उसे काबू में

रखने की प्रयत्न करती है । विद्या ने न मनाने पर वह चूप बैठती है, किंतु विद्या के साथ अनप-शनप की बातें नहीं करती ।

समझदार रूक्मिनी को अपनी लडकी विद्या की हमेशा चिंता लगी रहती है । विद्या के विवाह के बाद जो संबन्ध बिगड गए थे । अतः फिर से समझौता करने के लिए आए हुए विद्या के ससूर के साथ जिक्र करने के लिए अपने ससूर ज्वालाप्रसाद तथा पुत्र नवल को वह सचेत भी करती है । विद्या को भी समझाने का प्रयत्न करती है, किंतु उसकी यह बात बनती है । फिर भी रूक्मिनी अपमानीत न होकर बडे उल्लास के साथ अपने कर्तव्य पर अडिग रहती है ।

रूक्मिनी मातृहृदय से बहुत भावुक है । नवल शादी करना छोडकर अपने को स्वातंत्र्य संग्राम में पूर्णरूप से झुका देता है, तब उसे नवल की चिंता हरदम सताती है । अतः वह अपने ससूर ज्वालाप्रसाद को नवल को मनाने के लिए भावुक होकर कह उठती है " बप्पा, किसी तरह रोकिए उसे । वह जेल में कैसे रहेगा ? वहाँ चक्की चलानी पड़ती है, बान बटने पडते है । " 28 किंतु उसे अपनी मातृहृदय की भावनाओं को नवल की जीद के सामने तुरंत मिटाना पडता है ।

आदर्श गृहिणी का रूप रूक्मिनी के चरित्र को विशेष योगदान दे पाया है । अपनी सास यमुना एवं पति गंगाप्रसाद के मृत्यु के उपरांत वह अपने घर की पुरी जिम्मेदारी ढाढस के साथ सँभालती है ।

वस्तुतः रूक्मिनी नवल जैसे क्रांतिकारी वीर की माँ है । अतः लेखक उसके चरित्र को और अधिक उभर सकता था किंतु लेखक ने उसे आदर्श गृहिणी के रूप से बाहर आने नहीं दिया है । इससे रूक्मिनी पर अन्याय ही हो गया है । किंतु फिर भी रूक्मिनी अपने आदर्श मानवीय गुणों के बल पर स्मरण में रहने के पद पर पहुँची है यही उसके चारित्रिक विशेषता का महत्वपूर्ण गुण है ।

उषा

उषा रायबहादूर कामतानाथ की लडकी है । उपन्यास के पाँचवे खंड में चित्रित उषा का चरित्र अल्प समय में भी बहुत अच्छा उभर पाया है ।

असीम सौंदर्य से लथपथ उषा का कंठ इतना मधुर है कि सामने बैठा व्यक्ति अनायास ही अपने - आपको खो बैठता है । नवल उषा के सौंदर्य की तारीफ करते हुए उसे कहता है - "उषा, मैं सोच रहा हूँ कि क्या भगवान ने तुम्हारे समान सुंदर किसी और को भी बनाया होगा ।" 29

रायबहादूर कामतानाथ की ज्वालाप्रसाद के साथ घनिष्ट मित्रता होने के कारण वह अपनी लडकी उषा का विवाह नवल के साथ करना चाहता है । यह बात उषा को मालूम होने के कारण वह नवल के साथ प्रेम करती है ।

सुसंपन्न परिस्थिति में पली हुई उषा में घमंड भी प्रचुर मात्रा में है । रायबहादूर जब उसे उनके साथ विलायत ले जाना चाहते तब उनकी पत्नी इस बात पर टोकती है, तब उषा गुस्से में आकर घमंड के साथ जमुना में डूबकर मरने की बातें करती है ।

उषा पुरातन विचारों को ठुकराकर आधुनिक विचारों को अपनानेवाली आधुनिक युवती है । इसलिए वह पुरातन मान्यताओं का स्वीकार नहीं करती है । नवल के पिताजी गंगाप्रसाद की बीमारी के कारण उसका विवाह अटक जाता है तब वह हमेशा उदास रहने लगती है ।

मित्रत्व गुण से युक्त उषा नवल की बहन विद्या के साथ हमेशा गहरे संबन्ध प्रस्थापित करती है । इसी कारण वहा विद्या भी नवल को स्त्री की व्यथा समझाते हुए कहती है " तो तुम कामतानाथ की लडकी से शादी नहीं कर सकोगे दादा ! उषा के अपने सपने हैं, अपनी महत्वकाक्षाएँ हैं । " 30 इससे स्पष्ट है कि उषा अपने मतलब के लिए ही मित्रत्व के संबन्धो को अच्छी तरह, से निभाती है ।

गंगाप्रसाद के मृत्यु के बाद नवल मन ही मन टूटने लगता है । उषा उसे हमेशा बनाए रखने का प्रयत्न करती है, किंतु नवल अपने आपको स्वतंत्रा अंदोलन में झुका देता है, तब उषा नाराज होकर अपने भविष्य के बारे में सोच-समझने लगती है और वह नवल से कहती भी है - "हाँ नवल बाबू, भविष्य क्या होगा, यह नहीं जाना जा सकता; किसी भी हालत में नहीं जाना जा सकता ।" 31

उषा के नवल से दूर हटते जाना नवल को भी अच्छा नहीं लगता है । वह हमेशा उसे समझौता करने को कहता है, किंतु नवल के नए रूप के साथ उषा समझौता नहीं कर पाती है । अतः वह उस स्पष्ट कहती भी है " मैं इन पर विश्वास नहीं करती । " 32

उपन्यास के अंत में उषा का प्रेमी रूप बहुत ही तीव्र रूप से मुखरित हो उठा है । वह नवल से साथ बेहद प्यार करती है, किंतु नवल उसे समय नहीं दे पाता है । अंतिम बार नवल जब उसे मिलने के हेतु आकर अपनी शुभकामनाएँ प्रकट करता है, तब उषा तिल-मिलाकर हो उठती है और कहती है "अपनी शुभकामनाएँ आप अपने पास रखिए, मुझे उनकी जरूरत नहीं है । " 33 कहकर वह नवल के साथ घृणा करने लगती है ।

इस प्रकार उपन्यासकार ने उषा और नवल के प्रेम को अधूरा छोड दिया है । फिर भी उषा ने अपने आदर्श प्रेम के कारण स्मरण में रहने योग्य अमिट सी छाप छोड रखी है ।

राधा

राधा जैदेई के पुत्र लक्ष्मीचंद की पत्नी है । राधा लक्ष्मीचंद की सुशील एवं समझदार पत्नी के रूप में हमारे सामने आती है । राधा में सहनशीलता, पतिपरायणता एवं सेवाभक्ति के गुण प्रचुर मात्रा में दिखाई हैं ।

राधा की सहनशील वृत्ति का परिचय हमें ज्वालाप्रसाद का चचेरा भाई किशनलाल ने राधा के साथ की हुई नीच कुचेष्टा से होता है । किशनलाल राधा को अकेली पाकर उसके ही घर में उसपर हाथ रखने का प्रयत्न करता है, तब राधा सहनशीलता एवं समझदारी को अपनाती है और अपनी इज्जत और धर्म के साथ ही साथ वह ज्वालाप्रसाद के परिवार की भी इज्जत रखती है ।

राधा के व्यक्तित्व पर यमुना का काफी प्रभाव पडा हुआ दिखाई देता है । इसी कारण

वश राधा में भी सेवाभक्ति का गुण मौजूद है । अपनी सास जैदेई बीमार पड़ने के बाद उसकी सेवान्शुषा बड़े लगन के साथ करती है ।

अपने घर आए हुए प्रत्येक व्यक्ति का मान सम्मान करना राधा अच्छी तरह से जानती है । यमुना को वह बड़े आदर के साथ चाची कहती है, तो ज्वालाप्रसाद को चाचा । ज्वालाप्रसाद के साथ जैदेई के गहरे संबन्ध होने के कारण उनका एक-दूसरे के यहाँ हमेशा आना-जाना होता है, तब राधा सभी का आदर सत्कार उचित ढंग से करने मे कभी आलस नहीं करती है ।

इसप्रकार उपन्यासकार ने राधा को सीमित रूप में अपने उपन्यास में स्थान देकर उसे आदर्श; पत्नी के रूप में चित्रित किया है ।

राधेलाल की पत्नी

मुन्शी शिवलाल के भाई तथा ज्वालाप्रसाद के चाचा राधेलाल की पत्नी स्वभाव से खाष्ट रूप में चित्रित की है । शिवलाल ने अपनी पत्नी मरने के बाद दूसरा विवाह नहीं किया था । अतः संयुक्त परिवार में राधेलाल की पत्नी ही अपना पूरा अधिकार जमा लेती है । ज्वालाप्रसाद के नायब तहसीलदार बनने के बाद परिवार में उनकी पत्नी यमुना का अधिकार होना चाहिए ऐसा छिनकी बार-बार शिवलाल को कहती है । किंतु शिवलाल "अरी छोड भी, राधे की बहू कोई पराई थोडे ही है घर की मालकिन है, जैसा ठीक समझती है वैसा करती है । " [34] ऐसा कहकर टाल देते है ।

छिनकी को राधेलाल की पत्नी की हरकते बिलकूल पसंद नहीं है । अतः वह यमुना को ज्वालाप्रसाद के साथ जाने की सलाह देती है । यह बात जब राधेलाल की पत्नी को मालूम होती है, तब वह अपना गुस्सा छिनकी पर तुरंत उतार देती है - "काहे री छिनकी, बहू का का समझाय पढाय रही है ? ----- हम मर गई हन का ? पंद्रह दिन के लिए हम ज्वाला के साथ जाय के सब कुछ ठीक कर देव ।" [35]

होशियार राधेलाल की पत्नी संयुक्त परिवार का अपने हित के लिए लाभ उठाना चाहती है। उसके चारों पुत्र निकम्में एवं बेकाम के हैं । अतः उनकी भलाई के हेतू वह हमेशा प्रयत्नशील

रहती है । अतः अपने उद्‌देश्य की पूर्ति के लिए वह फतहपुर से ज्वालाप्रसाद के यहाँ घाटमपुंर में अपने पुरे परिवार को ले जाती है और वहाँ भी अपनी अधिकार जमा लेती है । राधेलाल की पत्नी अच्छी तरह से जानती है कि अगर ज्वालाप्रसाद एक बार अपने अधिकार के बाहर गया, तो अपने परिवार पर आपत्ति आते बिना नहीं रहेगी । इसलिए वह संयुक्त परिवार के साथ चिपक कर रहने का प्रयत्न करती है ।

राधेपाल की पत्नी में धर्म-भरूता प्रचुर मात्रा में है । छिनकी जाति से कहारिन होने के कारण उसका रसोई घर में जाना भी उसे पसंद नही है । वह छिनकी को स्पष्ट शब्दों मे अपनी कही जबान से सुनाती है "हाँ छिनकी रानी, अब रसोई माँ तुम्हार पैर घुस गा है न । दादाजी केर धरम ले लीन्हेव हो उन्हे दाल-भात खिलाय के, अब हम लोगन केर बारी है ।"[36]

स्वार्थी राधा ज्वालाप्रसाद के घर में रहते हुए उसकी ही कमाई पर अपने लिए तथा अपनी बहुएँ के लिए किसी से भी बिना बताए गहने बनवा लेती है । उसकी स्वार्थी वृत्ति का परिचय भांडार घर की चाभी लेने से भी होता है । उसकी इसी वृत्ति के कारण छिनकी ने उसके खानदान को दुर्योधन के खानदार की दी हुई उपमा उचित ही है - "इहै जो ज्वाला के चाचा का खानदान ज्वाला की कमाई पर मौज करैं का आय रहा है नौन दुरजोधन का खानदान इकट्ठा हुई रहा है ।"[37]

घर में राधेलाल के परिवार के कारण हमेशा तनावपूर्ण वातावरण रहता था । अतः उसे ऊबकर ज्वालाप्रसाद उन सबको फतेहपुर जाने के लिए कहता है, तब राधेलाल की पत्नी बहुत ही शोर मचाती है । राधेलाल की पत्नी में एक और दुर्गुण भले ही क्यों न हो किंतु दूसरी ओर उसमें स्नेह एवं मातृतव के गुण प्रचुर मात्रा में मौजुद थे । ज्वालाप्रसाद की माँ बचपनावस्था में ही मर गई थी, तब से उसने ज्वालाप्रसाद का अपने लाड़-प्यार में भरण-पोषक करके उसे सगी माँ का सा प्यार दिया था । ज्वालाप्रसाद का घर छोड़ते समय वह भावुक होकर आहत स्वर में उसके पैर पकड़ कर कहती है "हाय बेटा, यह दिन भी देखना बदा था हमारे भाग में । बेटा हम लोगन का छमा करो ।"[38]

स्पष्ट है कि राधेलाल की पत्नी में मातृत्व गुण भरपूर मात्रा में इत्र-तत्र देखने को मिलते हैं । कुछ दुर्गुर्णों को अगर छोड़ दिया जाय तो राधेलाल की पत्नी का चरित्र और अधिक ऊँचा उठ सकता था ।

शामलाल की पत्नी

संयुक्त परिवार में एक स्त्री के मन में घर की ही दूसरी स्त्री के प्रति किस तरह से अमानवीय व्यवहार घटित होता है, इसका उदाहरण है राधेलाल का द्वितीय पुत्र शामलाल की पत्नी ।

वस्तुतः राधेलाल के घर में शामलाल की पत्नी का सबसे अधिक निरादर किया जाता था । उसका कारण था वह अब तक संतानहीन थी । साथ ही साथ वह दिखने में कुरूप थी और मुँहफट भी। जिसके कारण सभी उसके साथ नफरत का सा व्यवहार करते हैं ।

शामलाल की पत्नी परिश्रमशील नारी होने के कारण वह यमुना का स्नेह यथाशीघ्र ही प्राप्त कर लेती है । परिश्रमशीलता के साथ ही साथ उसमे सहनशीलता भी प्रचुर मात्रा में है । उसकी सास उसके साथ हमेशा क्रूरता का व्यवहार करती है और कभी कभी उसे परिवार के सदस्य मार - पीट भी करते है, किंतु वह उनके खिलाफ एक लब्जभी निकालती नहीं है । उसकी सास अन्य बहू को गहने बनवाती है, किंतु उसके लिए कुछ भी बनवाती नही है तब भी वह मौन रहना पसंत करती है ।

शामलाल की पत्नी में सहनशीलता, परिश्रमशीलता आदि गुण देखकर यमुना भी प्रभावित होती है और उसके मन में उसके प्रति स्नेह की भावना पैदा होती है । यमुना ही एकमात्र स्त्री है, जो शामलाल की पत्नी का आदर करती है और उसे धीरज बंधवाने का काम करती है । संयुक्त परिवार जब टूट जाता है और शामलाल की पत्नी अपने परिवार के साथ जब बिदा होती है, तब यमुना उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए अपने पैर से पाजेब उतार कर उसे देते हुए कहती है - "तुम्हारे लिए मैं कोई गहना नहीं बनवा सकी बहू, यह मेरी पाजेब लेती जाओ, ----- । संभालकर रखना इसे ।" [39]

इस प्रकार शामलाल की पत्नी ने अल्प समय में अपनी अमिट सी छाप छोड दी है ।

मलका उर्फ माया शर्मा

मलका को जौनपुर की मुस्लिम युवती के रूप में चित्रित किया है । किसी ताल्लुकेदार के नुत्फे से पैदा हुई मलका के पास अमाप धनराशी है । फिर समाज की द्रुष्टि से मलका पतित

है । उसके लुभावने सौंदर्य के कारण कतिपय लोग उसकी और आकर्षित होते हैं । वस्तुतः उपन्यासकार ने मलका को वेश्या के रुप में चित्रित किया है ।

अनिंद्य सुंदरी मलका की ओर गंगाप्रसाद भी तुरंत आकर्षित हो जाता है । उसके सौंदर्य की तारीफ करते हुए गंगाप्रसाद अलीरजा को कहता है "अलीरजा साहेब, आपको मैं यह बतला दूँ कि उसके रूपयों से मुझे मोह नहीं है । मैं तो उसकी मुहब्बत का कायल हूँ ।" 40

जैनपुर में हिन्दू-मुस्लिम दंगों की कैची में दबी हुई मलका अपने को सहारा पाने के हेतु गंगाप्रसाद को अपना सर्वस्व अर्पित कर देती है । वह गंगाप्रसाद के साथ प्रेम करने लगती है और उसमें वह संतुष्ट भी हो जाती है । गंगाप्रसाद उसके प्रेम में इतना पागल होता है कि वह अपना सब कुछ भूल कर बार-बार उसे मिलता रहता है ।

भोली एवं सहनशील मलका समाज द्वारा रण्डी शब्द से पुकार ने पर भी गंगाप्रसाद के साथ एकनिष्ठ रहकर अपने प्रेम को अंत तक निभाना चाहती है । मलका इतनी भोली है कि वह समाज के मतलब को ठीक ढंग से समझ नहीं पाती है । वह गंगाप्रसाद को उसके साथ विवाह करने का प्रस्ताव भोलेपन से प्रकट करती है किंतु उसे अपमानीत ही होना पड़ता है । धूर्त ज्वालाप्रसाद मलका मुस्लिम जाति की होने कारण विवाह प्रस्ताव अस्वीकृत कर देता है, जिससे मलका बहुत ही आहत होती है ।

मलका के साथ विवाह करने के लिए गंगाप्रसाद जब नकार देता है, तब अलीरजा मलका के साथ विवाह करने की बात गंगाप्रसाद को कह देता है । किंतु सांप्रदायिक दंगो से उबी हुई मलका हिन्दू बनना चाहती है । उपन्यासकार ने मलका के द्वारा जाति व्यवस्था पर तीखा प्रहार किया है । साथ ही साथ पुरूष की भोग लिप्सा वृत्ति पर भी । अतः मलका इन सब झंझटो से अपने को बाहर निकालने का प्रयत्न करती है । गंगाप्रसाद उसके साथ सहानुभूतिसा व्यवहार करता है और वह उसका उद्धार भी करना चाहता है । इसलिए वह मलका को अलीरजा के साथ निकाह पढने की बात करता है किंतु स्वाभिमानी मलका विद्रोही स्वर में गंगाप्रसाद को कह देती है कि "तो आप मुझको झोडकर इस मरदूद के गले में मढना चाहते हैं । ----- । मैं खुदखुशी कर लूंगी, लेकिन इस बेशरम कमीने के साथ किसी भी हालत में निकाह नहीं पढाँऊंगी ।" 41 गंगाप्रसाद के

समझाने पर मलका अलीरजा के साथ विवाह करने का झूठा आश्वासन देकर वह उनके साथ बनारस से कानपुर आती है । कानपुर में आने के बाद मलका सत्यव्रत शर्मा नामक एक कॉंग्रेस कार्यकर्ता के साथ विवाह करके हिन्दू बन जाती है और अपना नाम मलका से माया शर्मा में बदल देती है । इस प्रकार मलका अपने जिंदगी की धारा को बदल देती है और गृहस्थी जीवन अपनाकर स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग लेती है ।

इस प्रकार भगवतीचरण वर्माजी ने मलका को माया शर्मा बनाकर उसको वेश्या के जीवन से उठाकर सीधे मानवीय धरातल पर उतार दिया है ।

संतो

संतो को दिल्ली के गोपीकिशन के पुत्र राधाकिशन की पत्नी के रुप में चित्रित किया है । लेखकने संतो का चारित्रिक उद्घाटन रहस्यात्मक ढंग से किया है । गंगाप्रसाद एवं रिपूदमनसिंह जब रेल से दिल्ली जा रहे थे तब गंगाप्रसाद का परिचय राधाकिशन के साथ हो जाता है । राधाकिशन के साथ संतो भी घूँघट ओढकर चूपचाप बैठी थी । वस्तुतः उपन्यासकार ने संतो को परंपरागत सनातनी एवं पतिपरायण आस्तित्वहीन नारी के रुप में चित्रित किया है ।

परंपरांगत भारतीय रमणी संतों का पति राधाकिशन कलकत्ता में ज्वेलर्स का कारोबार संभालता है, किंतु कायर तथा अकार्यक्षम राधाकिशन विलासी बन जाता है । उसकी इसी प्रवृत्ती के कारण संतो को अपनी जिंदगी अधूरी महसूस होने लगती है । उसके बारे में संतो गंगाप्रसाद को कहती भी है "अगर यह इतने मूर्ख और बेशरम न होते तो इस घर में क्या हालत होती ? ----- रूपया - पैसा, मान मर्यादा सब कुछ तो मिल रहा था उन्हे ।" [42]

अनिंय सुंदरी संतो की आवाज भी बहुत मधुर एवं संगीतमयी होने कारण वह गंगाप्रसाद पर अपनी अमिटसी छाप छोडती है । जिससे गंगाप्रसाद उसको पाने के लिए पागल हो जाता है ।

संतो अपनी अधूरी जिंदगी पूर्ण करने के लिए हमेशा तडपने लगती है । अतः उसकी पूर्तता करने के लिए वह गंगाप्रसाद की जिंदगी में प्रवेश भी करती है ।

गंगाप्रसाद के साथ अवैध प्रेम के सबन्ध प्रस्थापित करने के बाद संतो गंगाप्रसाद के प्रेम में इतनी पागल हो जाती है कि वह ह रदम उसके घर पर उसका इंतजार करती है । गंगाप्रसाद भी उसे जिंदगी भर उसका गुलाम बनकर रहने का वचन दे देता है, जिससे संतो पूर्णरूप से संतुष्ट हो जाती है ।

संतो बुद्धि से इतनी तेज है कि वह अपने प्रभावी व्यक्तित्व एवं प्रतिभाशाली बुद्धि के सहारे मिस्टर वाट्स जैसे पागल दिवाने की सहायता से अमाप धनराशी एकटठा कर लेती है और संतो से सतवंत कुँवर बन जाती है । गंगाप्रसाद को संतो के इस नए रूप का पता चलता है तो वह अश्चर्यचकितसा हो जाता है । उसके पूछने पर संतो ढाढस के साथ कहती है "मेरे देवता, तुम्हींने तो मुझे वह बनाया है, जो मैं हूँ ।" 43

गंगाप्रसाद जब संतो से नफरत करने लगता है तब वैभव और विलास से उन्मत संतो उसे स्पष्ट कह देती है कि मैं अपने को बनाये रखने के लिए एवं संतुष्टता पाने के लिए सौदा करती हूँ। स्पष्ट है संतो व्यवहारी स्त्री है । उसके साथ ही साथ संतो में घमंड भी बहुत ही ज्यादह मात्रा में है । वह गंगाप्रसाद को जलाती हुई कहती है "मैं रानी हूँ, मेरे पास लाखो रूपये हैं । और तुम अपनी तरफ देखो, तुम क्या हो ? -----, कुढ़ते हो, तुम्हारे अंदर घृणा है, तुम्हारे अंदर हिंसा है ।"44

इस प्रकार संतो अपनी नई जिदंगी बनाने में सफल हो जाती है । चाहे उसे किसी भी मार्ग का अवलंब क्यों न करना पडे, किंतु वह अपने मतलब की पूर्ति करने में कामयाब हो जाती है । गंगाप्रसाद जैसे डिप्टी कलक्टर को भी उसके व्यक्तित्व के सामने अंत में हार खानी पड़ती है ।

वस्तुतः संतो परिवर्तनशील एवं गतिशील नारी है । उसके व्यक्तित्व का परिवर्तन अनायास ही उभर नहीं पाया है । उसे अपने व्यक्तित्व को समाज के बदलते हुए नए रंग-बिरंगे रूपो के साथ बदलना पड़ता है । जिससे शरीफों के लिए उसकी यह परिवर्तनशीलता घृणास्पद लगना अनुचित नहीं है, उससे गंगाप्रसाद जैसे शरीफ लोग भी कैसे बच सकते है ।

कैलासो

अनिंद्य सुंदरी कैलासो संतो की जेठानी है । संकटों के कारण गोपीकिशन का संयुक्त परिवार टूटने के बाद श्रीकिशन और राधाकिशन अलग-अलग रहने लगते है । कैलासो अपने पति

के साथ दिल्ली में रहती है । उसका पति श्रीकिशन दिल्ली में अपनी ज्वेलर्स फर्म का कारोबार देखता है ।

आर्थिक संकटों का सामना करने के लिए कैलासो अपने पति के साथ होते हुए भी अवैद्य मार्ग से अमाप धन-दौलत कमाती है और वह उस इलाखे में बहुद्‌ध प्रसिद्‌ध हो जाती है । संतो द्वारा कैलासो का परिचय जब गंगाप्रसाद के साथ हो जाता है, तब वह गंगाप्रसाद को भी अपने जाल में फँसाने का प्रयत्न करती रहती है ।

कैलासो में प्रतिहिंसा की भावना भी प्रचुर मात्रा में है । संतो और गंगाप्रसाद के बढ़ते हुए सबन्ध उसे चैन से बैठने नही देते । अतः मनही मन जलने लगती है, किंतु गंगाप्रसाद को पाने के लिए भरसक प्रयत्न करती है । कामुक प्रवृत्ति के अंधे गंगाप्रसाद को कैलासो के साथ भी समझोता करना पड़ता है ।

कामुक प्रवृत्त की लुभावनेवाली कैलासो समाज के प्रत्येक पहलू को अच्छी तरह से परखती है और अपने हर असंभव कार्य को संभव कर देती है ।

कामुक प्रवृत्ति की कैलासो भावुक भी है । वह अपने पाँच कमरेवाले मकान में हरदम गंगाप्रसाद का इंतजार करती है और उसको मिलने के लिए तडपती रहती है । गंगाप्रसाद जब उसे मिलने आता है तब उसका भावुक रूप तुरंत जागृत हो उठता है "तुम्हारे आने की खबर सुनकर मन में - गुदगुली उठी -----। रात भर का सफर करके आए हो न ।" [45] स्पष्ट हे कैलासो उच्च तौर पर वेश्या का सा ही व्यवहार करती है ।

कैलासो में ईर्ष्या एवं द्वेष की भावना संतो से बहुत ज्यादह है । गंगाप्रसाद का संतो के प्रति लगाव होने के कारण कैलासो संतो के साथ ईर्ष्या करने लगती है । उसकी यह ईर्ष्या की भावना अस्वाभाविक भी नही है, क्योंकि संतो उसकी सहायता से ही बहुत कुछ कमा पा रही थी । उसी कारण उन दोनों में हमेशा अनप-शनप की बातें होती रहती है ।

कैलासो व्यवहारकुशल एवं बोलने में चतुर है । उसका देवर राधाकिशन जब उसके और संतो के बिगडे हुए सबन्धो को लेकर समझौता करता है तब वह उसे यह उत्तर देती है कि "बडे

आए बट्वारे की बात चलाने वाले ! जब महीनों मेरे कमरे में पड़े रहते थे तब बटवारा नहीं हुआ था, और जब राजा बहादुर बन गए, दस लाख रूपया पैदा कर लिया तो बटवारा हो गया । ऐसे सस्ते नहीं छूटोगे लाला ! एक-एक पैसे का हिसाब देना होगा ! " [46] इससे स्पष्ट है कि कैलासो अपने किए हुए एहसान की किमत वसूल करना चाहती है, जिससे उसकी व्यवहार नीति का परिचय होता है ।

इस प्रकार कैलासो बुद्धि से तेज, व्यहार की पक्की आदि गुणो के कारण वर्गगत स्त्री पात्रों में अपनी अमिट सी छाप छोड़ चुकी है ।

रानी हेमवती देवी (रानी घाटबागन)

रानी हेमवती देवी राजा साहेब घाटबागन की पत्नी है । स्वार्थ प्रवृत्ति की रानी हेमवती देवी अपने पति राजा साहेब घाटबागन की तरह प्रत्येक व्यक्ति के साथ व्यवहार करती है । उसका पति घाटबागन का सरकार दरबार में प्रभाव होने के कारण रानी हेमवती देवी अपने पति के नाम से हर क्षेत्र में फायदा उठा लेती है । रानी हेमवती देवी प्रदर्शनप्रिय प्रवृत्ति की आधुनिक नारी है । अपने व्यक्तित्व का प्रभाव जमाने के हेतु वह हर पार्टी में अपने पति के साथ उपस्थित रहती है ।

स्वार्थी हेमवती देवी अपनी भोली-भाली लडकी लावण्यप्रभा की भावनाओं के बारे में कभी सोचती तक नहीं है । अतः वह उसका विवाह रिपुदमनसिंह जैसे अधेंड उम्र के डिप्टी कलक्टर के साथ कराने में जरा भी संकोच नहीं करती ।

रानी हेमवती देवी में अधेड उम्र में कामुक भावना प्रचुर मात्रा में है । अतः अपने हेतु को साध्य करने के लिए वह संतो जैसे गिरी हुई स्त्री के साथ भी सबन्ध प्रस्थापित कर लेती है । अतः वह संतो की अनुपस्थिती में गंगाप्रसाद के साथ अपनी कामुक वासना तृप्त कराने में नहीं हिचकिचाती है । कामवासना के कारण उत्तेजित होकर वह गंगाप्रसाद को स्पष्ट रूप से कहती है कि "वैसे तुम यहाँ पलंग पर मेरे साथ संतो का इंतजार करसकते हो ।"[47]

इस प्रकार रानी हेमवती देवी को गिरी हुई स्त्री के रुप में चित्रित किया है । उसके इस प्रकार के व्यवहार से हमारे मन में सहानुभूति का भाव जागृत नहीं हो पाया है ।

<u>लावण्यप्रभा</u>

लावण्यप्रभा राज साहेब घाटबागन की पुत्री है । लावण्यप्रभा देखने में सुंदर है, किंतु उसका व्यक्तित्व कुछ मात्रा नें भोला-भाला है । लावण्यप्रभा का व्यक्तित्व भोला जरूर है, किंतु उसके व्यक्तित्व में आधुनिकता को बोध जागृत है । लावण्यप्रभा को आधुनिकता का बोध होने के कारण वह प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व को बहुत अच्छी तरह से समझ लेती है, किंतु उसके इस बोध की ओर कोई भी ध्यान नहीं देता है ।

भोली लावण्यप्रभ में ढाढस भी है । उसके विवाह पार्टी के समय जब डिनर का आयोजन किया जाता है तब मेजर वट्स के बारे में चर्चा चल रही थी । वस्तुतः लावण्यप्रभा को मेजर वॉट्स का व्यक्तित्व तनिक भी भाता नही था, क्योंकि वह उसकी बुरी नजर को अच्छी तरह से समझ चुकी थी । अतः भरी पार्टी में वह मेजर वाट्स के खिलाप बड़े ढाढस के साथ अनुद्गार निकल कर कहती है "न जाने मुझे उन्की शकल देखते ही डर लगता है ।" [48] वह इतना कह कर भी चूप नही बैठती आगे बात बढाकर कहती है "पपा और ममी से उनकी दोस्ती है, और मुझे यह दोस्ती भी अच्छी नहीं लगती ।"[49] स्पष्ट है लावण्यप्रभा स्पष्टवादी युवती है ।

स्पष्टवादी लावण्यप्रभा मर्यादाशील आधुनिक युवती है । वह अपने अचरण से स्त्री सुलभ मर्यादा का अल्लंघन होने नही देती है । अपने पिता और माता की आज्ञा का पालन करना वह अपना कर्तव्य समझती है । अतः वह अपने माता पिता के निर्णय को स्वीकृत करके रिपुदमनसिंह जैसे अधेड उम्र के व्यक्ति के साथ विवाह कर लेती है ।

लावण्यप्रभा के चारित्रिक व्यक्तित्व की ओर देखने के उपरान्त एक बात ध्यान में आती है, कि उपन्यासकार ने उसके व्यक्तित्व का निर्माण केवल अनमोल विवाह की समस्या को उठाने के लिए ही किया है, ऐसा प्रवित होता है । किंतु बाद में लेखक ने लावण्यप्रभा को किसी भी जगह पर स्थान नही दिया है, जिससे यह समस्या उसके विवाह तक ही सीमित रह गई है ।

<u>रानी साहिबा विजयपुर</u>

रानी साहिबा विजयपुर बनारस के डिप्टी कलक्टर रिपुदमनसिंह की मौजी और राजासाहब

धरनीधर सिंह की पत्नी है । सामान्य व्यक्तित्व की रानी साहिबा विजयपुर वाक्पटुता के कारण सामने वाले व्यक्ति के मन पर अपनी अमिटसी छाप छोडने में कुशल है ।

वस्तुतः रानी साहिबा विजयपुर लालची एवं क्रूर प्रवृत्ति के दुर्गुणों से युक्त नारी है । अभूषणों के प्रति असीम लालसा उसके लालची प्रवृत्ती का दर्शन करती है । तो अपनी चचेरी बहन का लडका शिवप्रतापसिंह तथा उसकी देवरानी (रिपुदमनसिंह की पत्नी) इन दोनों की हत्या रिपुदमनसिंह करता है, तब वह रिपुदमनसिंह को बचाने के लिए सबूत नष्ट कर देती है । उससे उसकी क्रूर प्रवृत्ति का दर्शन होता है ।

संक्षेप में कहा जा सकता है रानी साहिबा विजयपुर धूर्त, लालची एवं क्रूरकर्मी स्त्री है ।

<u>सलीमा</u>

उपन्यासकार ने सलीमा को रहीमपुर मौजे के गफूर मियाँ की बीवी के रुप में चित्रित किया है । सलीमा इतनी भोली है कि शामलाल उसकी सेवा करने के बहाने उसपर कुछ रूपये खर्च करता है और बदले में उसके गाँव का आठ आना हिस्सा अपने नाम पर लिख लेता है । इस बात की उसे खबर तक नहीं है । उसका दामाद शिवलाल के खिलाफ मुकादमा दायर कर देता है । मुकादमा जीत ने के लिए शामलाल अपने चचेरे भाई ज्वालाप्रसाद की मद्द चाहता है, किंतु वास्तविकता मालूम होने के बाद ज्वालाप्रसाद शामलाल की मद्द नही करता है ।

अपने को ठगा लिया है, इस बात का पता जब सलीमा को लग जाता है, तब वह पंडित गिरिजाशंकर की अदालत में मुकदमे के समय यह बयान देती है कि "न तो मैने जायदाद बै की है, और न हिबा की है, उस अफयून खिलाकर उसके अंगूठे के निशन लिये गए है ।" [50] ज्वालाप्रसाद भी अदालत में अपने को इसके बारे में कुछ मालूम नही है कहकर सलीमा की ही मद्द करता है, जिससे सलीमा को मुकदमा जीतने में सहायता मिलती है ।

लेखक ने सलीमा जैसे पात्रों के सहारे तत्कालीन युग में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का खून किस तरह से चूसता है इसका मार्मिक चित्रण किया है ।

रूक्मा

रूक्मा को नायक जाति की पहाडिन लडकी रूप में चित्रित किया है । वस्तुतः रूक्मा क्रांतिकारी नवयुवति है, किंतु आर्थिक विपन्नता के कारण वह मजबूर है । उसका प्रेमी दानसिंह भी निर्धन है । अतः वह भी उसकी मदद नही कर पाता है । रूक्मा की बिकट आर्थिक परिस्थिति के कारण ही उसे वासना की शिकार बनना पडता है । मीर साहब नामक एक पुलिस अधिकारी उसे अपनी काम वासना की पूर्ति करने के लिए खरीदता है, और उसे जबरदस्ती से मुस्लिम बनाने का प्रयत्न करता है ।

क्रांतिकारी विचारों की रूक्मा अपनी मजबूरी के कारण मीर साहब के कतिपय अत्याचार सहन करती है, किंतु अपनी जात बदलने के लिए वह तैयार नही होती है । इससे स्पष्ट होता है कि रूक्मा सहनशील एवं दृढनिश्चयी नारी है ।

हितचिंतक एवं भावुक रूक्मा को अपने प्रेमी दानसिंह की हमेशा चिंता रहती है । वे लोग उसे मार डालेंगे इस भय से वह डरने लगती है । गंगाप्रसाद को जब रूक्मा की हालत का पत्ता चलता है, तब वह दानसिंह और रूक्मा का मिलन करवाता है । दानसिंह की हालत को देखकर वह भावुक होकर उसे समझाती है "नहीं रे दाना, रो मत अपने ऑसू पोछ डाल । तू क्यों छमा माँग रहा है; तूने कोई अपराध नहीं किया है । यह सब तो भगवान की मर्जी है ।" 51

दुर्भाग्यशाली रूक्मा को अपना प्रेम सफल नहीं हो पा रहा है यह देखकर उसे बहुत दुःख होता है । वह दानसिंह को कहती है "आगले जनम तक राह देख; फिर हम दोनो मिलेंगे । -----, अपने बापू का हाथ बटा जाकर ! मुझे मेरे भाग पर छोड दे ।" 52

स्पष्ट है रूक्मा का प्रेम पवित्र था, किंतु समाज ने उसके प्रेम को अपने मतलब के लिए अपवित्र करके उसे पूर्ण होने नहीं दिया है यही रूक्मा के चरित्र का दुर्भाग्य है ।

रानी देवकुँवर

रानी देवकुँवर घटमपुर के जमींदार ठाकुर गजराजसिंह की पत्नी है । ठाकुर गजराजसिंह

की ज्वालाप्रसाद के साथ मित्रता होने के कारण रानी देवकुँवर भी अपने पति की तरह ज्वाला की पत्नी यमुना के साथ मित्रता का व्यवहार प्रस्थापित करती है । मित्रता करने के पीछे मात्र स्वार्थ की भावना ही थी ।

स्वार्थी वृत्ति की रानी देवकुँवर अपने काम बनाने के लिए अपनी लड़की के विवाह के समय यमुना का बहुत मान सम्मान करती है और उसपर पूरी जिम्मेदारी सौंप कर ज्वालाप्रसाद के परिवार की मर्जी संपादन कर लेती है ।

उपन्यासकार ने रानी देवकुँवर के चरित्र का निर्माण केवल प्रासंगिक कथा के निर्माण करने के लिए ही किया है । वह भी केवल एक दो पृष्ठों के अंश में ही । अन्यत्र उसका व्यक्तित्व कहीं पर भी उभर नहीं पाया है ।

उपयुक्त स्त्री पात्रों के अलावा भगवतीचरण वर्माजी ने 'भूले बिसरे चित्र' में कतिपय स्त्री पात्रों के नाम भी दिए है और उनके चरित्र को एक दो पंक्तियों में समेट दिया है । इन स्त्री पात्रों से उपन्यास की कथावस्तु में कोई विकास भी नहीं हो पाया है और न बाधा भी । वे स्त्री पात्र हैं -

महाराजीन - महाराजीन को ज्वालाप्रसाद की नौकरानी के रूप में चित्रित किया है ।

महारानी - महारानी ज्वालाप्रसाद की पत्नी यमुना की माँ के रूप में चित्रित किया है । महारानी सुसंस्कृत एवं सुशील नारी है ।

रिपुदमनसिंह की पत्नी, जोनाथन डेविड की पत्नी तथा रायबहादुर कामतानाथ की पत्नी आदि के नाम भी नहीं दिए है, और न ही उनके चरित्र का विकास हो पाया है ।

'चारूबाला चक्रवती' को लावण्यप्रभा की सहेली के रूप में चित्रित किया है, तो 'रानी' सिद्धेश्वरी की बहन है । इन दोनों स्त्री पात्रों को पुरे उपन्यास में केवल एक-दो पक्तियों में ही स्थान दिया है ।

गंगादेवी - गंगादेवी का एक सफल काँग्रेस सेविका के रूप में उल्लेख किया है ।

फतहपुर की करीमन वेश्या - का चरित्र भी उभर नहीं पाया है । 'भरोसी' और 'मैकी

कहारिन' जैदेई की नौकरानियाँ है ।

क्रांतिकारी विद्या की बहन के रूप में सुधा नामक लड़की का केवल नाम ही दिया है ।

सामर्थ्य और सीमा

भगवतीचरण वर्मा द्वारा लिखित 'सामर्थ्य और सीमा' यह उपन्यास मृत्यु और विनाश का संगीत है । कथावस्तु में एकसूत्रता लाने के लिए लेखकने इस उपन्यास को छोट-छोटे आठ भागों में विभाजित किया है । सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के धरातल पर लिखे गए इस सामाजिक उपन्यास में पुरूष एवं स्त्री पात्रों की संख्या सीमित रखी है । इसमें जो स्त्री पात्र चित्रित किए है, उनका चरित्र चित्रण इस प्रकार रहा है ।

रानी मानकुमारी

'सामर्थ्य और सीमा' उपन्यास की नायिका रानी मानकुमारी नैपाल राजवंश में पैदा हुई थी । छब्बीस वर्षीय रानी मानकुमारी के सौंदर्य का चित्रण लेखक ने अत्यंत मार्मिक ढंग से चित्रित किया है "रानी मानकुमारी को अद्वितीय सौंदर्य मिला था, आर्य और मंगाल रक्त का सम्मिन्श्रण । रानी मानकुमारी का वर्ण चम्पा की भाँति पोला तथा सुनहला था । स्वस्थ और सुड़ैल, शरीर गठा हुआ । युवावस्था के रक्त के गुलाबीपन ने उनके वर्ण को और भी निखर दिया था ।" 53 लेखक ने उसके सौंदर्य का वर्णन करते समय उसमें कहीं पर भी अश्लिलता आने नहीं दी है, जिससे रानी मानकुमारी की पवित्रता का दर्शन होता है ।

अनिंद्य सुंदरी रानी मानकुमारी का सौभाग्य छीन लेने के कारण वह हमेशा दुःखी रहती है। उसके पति की अचानक मृत्यु रानी मानकुमारी के वैधव्य का कारण बनती है । वैधव्य प्राप्त रानी जब विदेश से यशनगर वापस आती है, तब उसे ज्ञात होता कि है कि राज्य-दीवान खुशबख्तराय उसके पति की सारी संपत्ति सरकार को सौंपकर राज्य सभा का सदस्य बना है ।

यशनगर में आने के बाद रानी मानकुमारी अपने पति द्वारा बनाई गई सुमनपुर विकास की योजना पर सोचने लगती हैं और सरकार द्वारा नियुक्त पाँच सदस्यों की समिति को वह सहायता करती है ताकि उसके पति का अधूरा स्वप्न पूरा हो जाए । किंतु नियति का दुर्भाग्यचक्र एवं मनुष्य की अहम् भावना उस योजना की पूर्ति होने नहीं देती । अतः दुःखी रानी मानकुमारी सरकार की कठोर नीति का सामना करके वैधव्य जीवन की कतिपय समस्याओं को महसूस करती रहती है ।

सरल एवं स्पष्टवादी विचारश्रेणी की रानी मानकुमारी समुमनपुर विकास के कारण उसके संपर्क में आए हुए पाँचो व्यक्ति में उसको पाने की भावना है यह अच्छी तहर से समझ लेती है । अतः पतिवियोग में वह दुःखी होकर उन पाँचो के प्रति यह अनुभव करती है कि "उन्होंने देखा कि उनके संपर्क में आनेवाले हर व्यक्ति में विनय है, आदर्शवाद के ऊँचे सिद्धान्त हैं और उपदेश है, हर एक आदमी सद्भावना और सदाचार को अपने जीवन का ध्येय बनाये हुए है । ----- उन्होंने अनुभव किया कि काम बनाने के लिए जिस चीज की आवयश्यकता है, वह उनके स्वभाव और प्रकृति में नहीं है ।" [54] स्पष्ट है रानी मानकुमारी का व्यक्तित्व सरल एवं स्पष्टवादी है । उसके व्यक्तित्व के बारे में प्रकट किया गया ज्ञानेश्वर राव का कथन उचित ही है । ज्ञानेश्वर राव के अनुसार "कुछ अजिबसा उलझा हुआ और माहेक व्यक्तित्व था रानी मानकुमारी का । कितनी कोमल कितनी सुकुमार; शरीर ही नहीं, आत्मा भी ।[55] उसके इसी व्यक्तित्व पर मोहित होकर उसे आर्थिक संकटो में मदद करने का अश्वासन देकर, अपने आपको सामर्थ्यवान, समझनेवाले, पाँचो व्यक्ति देवलकर, मसूर, शिवानंद शर्मा एवं ज्ञानेश्वर राव रानी मानकुमारी के तन-मन का उपभोग करना चाहते है । इस पर खीझकर मानकुमारी अपने सौंदर्य को दोष देते हुए कहती है "मैं अपने निरर्थक, निरूदेश्य और लक्ष्यहीन सौंदर्य से आजिज आ गई हूँ । ----- मैं सोचने लगती हूँ कि क्या यह सौंदर्य मेरे लिए अभिशाप नहीं है ।" [56]

नियती के चक्र में पीसती रही रानी मानकुमारी खुद दुःखी होते हुए भी दूसरों के प्रति सद्भावना रखती है और उनका उचित मान-सम्मान रखती है । अपने चचेरे ससूर नाहरसिंह के प्रत्येक उपदेश का वह पालन करती है और उनके प्रति स्नेह का भाव प्रकट करती है ।

जीवन के प्रति रानी मानकुमारी का दृष्टिकोन बड़ा स्वस्थ है अतः वह अपने जीवन में उमंग, विलास, उत्सव आदि को हमेशा महत्वपूर्ण स्थान देती है । वह अपनी चिंता, अपना दुःख आदि को विराग में डुबाकर उनकी अवज्ञा करना नहीं चाहती है । इससे स्पष्ट होता है कि अभावों को होते हुए भी अपने को हमेशा प्रफुल्लित बनाये रखने की उमंग रानी मानकुमारी में प्रचुर मात्रा में है ।

रानी मानकुमारी भावुक इतनी है कि छोटे से भी आघात से उसका हृदय द्रवित हो उठता है, जिससे वह कई बार रोने भी लगती है । किंतु उसका रोना अस्वाभाविक नहीं है । संतानहीन होने के कारण उसका भावुक हो उठना स्वाभाविक ही है ।

भावुक रानी मानकुमारी में विलक्षण प्रतिभा भी है । उसके फलस्वरूप उसका कवि रूप मुखरित हो उठा है । शिवानंद शर्मा मानकुमारी के इस नये रूप को देखकर मुग्ध हो जाते है । किंतु भावुक रानी किसी प्रवाह में बह नहीं जाती है । जिससे उसके संयम का दर्शन होता है ।

सुशिक्षित रानी मानकुमारी का व्यक्तित्व आधुनिकता एवं पुरातनता का मिश्रण होने के कारण वह भारतीय संस्कृति के आवरण को हटा नहीं पाती है । संस्कृति के आवरण की रक्षा करते समय उसने खुद भी हमेशा संयम को अपनाकर भावुकता पर विजय पाई है, जिससे उसका चरित्र और अधिक मोहक एवं गरिमामयी बन पड़ा है । वैधव्य रानी मानकुमारी के लिए असहनीय है । अतः इस स्थिति में अन्य पुरूषों का सहारा लेने की प्रवृत्ति अस्वाभाविक नहीं है । फिर भी भारतीय संस्कृति उसे इस बात को स्वीकृति नहीं दे पाई है । अतः संस्कृति के अवरण में बाँधी हुई मानकुमारी मंसूर तथा देवलंकर के विवाह प्रस्ताव को ठुकरा देकर मंसूर को स्पष्ट कहती है "आपका प्रस्ताव इतना अनायास आया कि मैं स्तब्ध रह गई । आप मुझे सोचने विचारने का समय दीजिए ।" 57 इससे स्पष्ट है कि रानी मानकुमारी में संस्कृति के प्रति बहुत आस्था है ।

अंत में हम कह सकते है कि अपने महान आदर्श एवं आचरण से रानी मानकुमारी ने समस्त विधवाओंकों प्रेरणा ही दी है । ऐसे महान व्यक्तित्व को अंत में नियति की अगाध लीला के कारण संस्कृति की गोद में लीन होना पड़ता है । अपना सब कुछ अधूरा छोड़कर यही उसके व्यक्तित्व की शोकांतिका है ।

वालिया

वालिया पोलिश युवती है । पोलंड पर जर्मनी के आक्रमण के कारण वह इंग्लैंड जाती है । वहाँ उसका परिचय अंध्र के रहनेवाले तैलंग ब्राम्हण ज्ञानेश्वर राव हो जाता है, जो दिल्ली के प्रसिद्ध

दैनिक पत्र 'रिपब्लिक' के प्रधान संपादक थे । पत्रकारिता के व्यवसायी ज्ञानेश्वर राव की विलक्षण प्रतिभा का देखकर वालिया इंग्लैड में उसके साथ विवाह कर लेती है ।

वालिया सुसंस्कृत नारी है । वह पतिधर्म को निभाना अपना कर्तव्य समझती है । ज्ञानेश्वर राव जब स्वदेश लौटता है, तब वह भी उसके साथ भारत आती है और अपने कर्तव्य पर अडिग रहती है ।

भोली वालिया ज्ञानेश्वर के साथ विवाह करते समय ज्ञानेश्वर राव के पूर्व जीवन के बारे में कुछ भी सोच विचार नहीं करती है । किंतु भारत में आने के बाद उसे उसकी वास्तविकता का पता चलता है । वालिया से पूर्व ज्ञानेश्वर राव ने भारतीय लडकी के साथ भी विवाह किया था, जो एक कॉलेज में अध्यापिका का काम करती है । अतः इस कारण वश वालिया और ज्ञानेश्वर राव में हमेश तनाव पैदा होता है । वह ज्ञानेश्वर के अभाव में अन्य पुरूषों के साथ मिलना जुलना प्रारंभ करती है, जिससे ज्ञानेश्वर राव वालिया के इस व्यवहार से उबने लगता है ।

प्रतिभासंपन्न वालिया भारत आने के बाद हिन्दी भाषा बडी लगन के साथ सीखती है, जब कि ज्ञानेश्वर राव हिन्दी के विरोधी है । स्पष्टवादी वालिया ज्ञानेश्वर राव के हिन्दी विरोधी प्रवृत्ति को देखकर उसे अमेरिका तथा ब्रिटेन का मानसिक गुलाम समझती है । स्पष्ट है वालिया ढाढसी, सुसंस्कृत एवं स्पष्टवादी विचारों को अपनाने वाली नारी है, जिसे ज्ञानेश्वर राव जैसे अहम् से भरे हुए, किंतु अपने को श्रेष्ठ समझनेवाले पत्रकार ने ठगाया है, यही उसका दुर्भाग्य है ।

सीमा सान्याल

सीमा कलकत्ते के रोजमरी सान्याल फर्म के जूनिअर पार्टनर श्री नवेंद्रशेखर सान्याल की लडकी है । माता-पिता की लाडली होने के कारण सीमा स्वतंत्र प्रवृत्ति की युवती है ।

कला एवं अभिनय की प्रेमी सीमा अपनी इच्छा पूर्ती के लिए शांतिनिकेतन में जाती है, किंतु उसकी स्वच्छंदता प्रवृत्ति उसे वहाॅ ज्यादह दिन रूकने नहीं देती । सीमा का कंठ कोकिल सा मधूर था । मणिपुरी तथा कथाकली नृत में सीमा का व्यक्तित्व भी प्रभावी था । अपने प्रभावी व्यक्तित्व के कारण ही वह इंजिनिअर एलबर्ट किशन मंसूर पर अपनी अमिटसी छाप छोडने में सफल हो जाती है ।

व्यक्ति की अच्छी परखी सीमा सान्याल युध्दकाल में मंसूर के साथ इंग्लैड भाग जाती है और उसके साथ विवाह कर लेती है ।

सीमा में ममत्व का गुण प्रचुर मात्रा में है । उसके इस गुण की तारीफ करते हुए मंसूर रानी मानकुमारी को कहता भी है "फ्रांस से जब मैं इंग्लिस्तान गया था तो मु-फलिसी और लावारिसी हालत में उस वक्त सीमा से मुझे दौलत मिली, इज्जद मिली, ममता मिली ।" [58] इससे स्पष्ट होता है कि सीमा दुसरे के दर्द को जानने वाली भावुक नारी है । उपन्यासकार ने सीमा को कला एवं संस्कृति के पुजारिन के रुप में चित्रित किया है, किंतु बाद में उसका पति मंसूर को उत्तर प्रदेश के सुमनपुर विकास योजना में भेजकर उसका और सीमा का संबन्ध तोड दिया है । जिससे सीमा का चरित्र स्वाभाविक ढंग से उभर नहीं पाया है ।

रोज ब्रैडी

रोज ब्रैडी को अनिंद्य सुंदरी अँग्लो-इंडियन विवाहीत युवती के रूप में चित्रित किया है । सुंदरता की प्रतिमूर्ति रोज ब्रैडी नाचने में पारंगत होने से इलाहाबाद में काफी प्रसिद्ध हो चुकी थी । उसका पति राबर्ट ब्रेडी ईस्ट इंडियन रेल्वे में गार्ड की नोकरी करता था । अतः उसे नोकरी के कारण इधर-उधर घुमना पडता है । अपने पति के प्रेम के अभाव की पूर्ति करने के लिए वह उपाय खोजती है । इसी कारणवश वह नाचने के प्रोग्राम में शामिल हो जाती है । वहाँ उसका परिचय दयाकिशन मक्खू के साथ होता है । इस प्रकार दोनों का स्नेह बढ़ता जाता है और बाद में रोज ब्रैडी मक्खू के साथ विवाह कर लेती है ।

अभागी रोज ब्रैडी एलबर्ट किशन मंसूर की माँ तो बन्ती है, किंतु उसे तुरंत ही वैधव्य जीवन की माला पहननी पडती है । उसका पहला पति राबर्ट ब्रैडी को जब रोज के दूसरे विवाह का पता चलता है, तब रोज और दयाकिशन मक्खू की गोली मार कर हत्या करता है और वह खुद भी आत्महत्या कर बैठता है ।

इसप्रकार लेखक ने रोज ब्रैडी को एक अस्थिर नारी के रूप में चित्रित करके बाद में उसने किए कर्म की सजा तुरंत देकर उसके चरित्र को अचानक हटा दिया है ।

कालसी

कालसी रानी मानकुमारी की नौकरानी है । लेखकने कालसी के कुल-शील आदि के बारे में कोई भी जानकारी नहीं ही है । लेखक ने कालसी को संयमी, स्वाभीभक्त, तर्कशील, समय की पाबंदी रखनेवाली आदर्श नौकरानी के रूप में चित्रित किया है ।

उपर्युक्त स्त्री पात्रों के आलावा 'सामर्थ्य और सीमा' में अन्य जो स्त्री पात्र आए है जिनका उपन्यास की कथावस्तु के विकास में कोई योगदान नहीं मिल पाया है । वे स्त्री पात्र हैं - चंपा - चंपा रानी मानकुमारी नौकरानी है । काशीबाई - काशीबाई देवलंकर की मामी है । शिवानंद शर्मा की पत्नी, रतनचंद मकोला की भारतीय पत्नी, नाहरसिंह की पत्नी, मिठठनलाल की पत्नी आदि ।

संदर्भ सूची

	लेखक	पुस्तक का नाम/प्रकाशन	पृष्ठ क्रमांक
1	भगवतीचरण वर्मा	आखिरी दाँव राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली - 6 नया संस्करण 1991	13
2	-- " --	वही	35
3	-- " -	वही	194
4	-- " --	वही	33
5	-- " --	वही	10
6	-- " --	वही	11
7	-- " --	भूले बिसरे चित्र राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. दिल्ली - 6 चतुर्थ संस्करण 1966	172
8	-- " --	वही	10
9	-- " --	वही	119
10	-- " --	वही	175
11	-- " --	वही	99
12	-- " --	वही	99
13	-- " --	वही	586
14	-- " --	वही	611
15	-- " --	वही	611

1.	2.	3.	4.
16	भगवतीचरण वर्मा	वही	611
17	-- " --	वही	623, 624
18	-- " --	वही	690
19	-- " --	वही	697
20	-- " --	वही	708
21	-- " --	वही	21
22	-- " --	वही	133
23	-- " --	वही	227, 228
24	-- " --	वही	111
25	-- " --	वही	600
26	-- " --	वही	243, 246
27	-- " --	वही	657
28	-- " --	वही	698
29	-- " --	वही	560
30	-- " --	वही	623
31	-- " --	वही	690
32	-- " --	वही	691
33	-- " --	वही	707
34	-- " --	वही	10
35	-- " --	वही	11
36	-- " --	वही	121
37	-- " --	वही	137
38	-- " --	वही	229
39	-- " --	वही	227, 228

1.	2.	3.	4.
40	भगवतीचरण वर्मा	वही	459
41	-- " --	वही	464
42	-- " --	वही	366
43	-- " --	वही	367
44	-- " --	वही	379
45	-- " --	वही	351
46	-- " --	वही	370
47	-- " --	वही	376
48	-- " --	वही	362
49	-- " --	वही	362, 363
50	-- " --	वही	168
51	-- " --	वही	339
52	-- " --	वही	339
53	-- " --	सामर्थ्य और सीमा राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. 8 फैज बाजार, दिल्ली - 6 पंचम संस्करण 1975	66
54	-- " --	वही	70
55	-- " --	वही	159
56	-- " --	वही	138
57	-- " --	वही	265
58	-- " --	वही	217